BA-III (H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पेपर - पाँच

मैथिली साहित्य इतिहास

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि व्याख्याता
मैथिली विभाग
R.S.J College, Rajnagar
Madhubani (Lnmu)

मध्यकालीन किर्तनिया नाटक

किर्तनिया नाटक कें प्रसिद्ध समालोचक प्रो० रमानाथ झा किर्तनिया नाच कहने छथि। ज्योतिरीश्वर आ विद्यापतिक नाटकक बाद कवि गोविन्द (17म शताब्दी) लिखल 'नलोपाख्यान' नाटक उपलब्ध अछि। मैथिली साहित्यक प्रथम इतिहासकार डॉ० जयकान्त मिश्र एहि नाटक कें 'नलचरित' नाटक कहने छथि। एकर पश्चात रामदास झाक 'आनन्द विजयाभिधान' नाटक गनैत अछि। ई महाकवि गोविन्ददासक अनुज छलाह। ई महाराज सुन्दर ठाकुर हेतु एहि नाटकक रचना करल जे मैथिली पदक भनिता सँ स्पष्ट अछि। 'आनन्द विजय' क कथा कृष्णाक रूप पर मोहित

होएब पुनः साक्षात्कार भेला पर राधाक हृदय मे कृष्णक प्रेम जागृत होएब पुनः राधाकृष्णक विरह वर्णन पश्चात् मित्रक सहायता सँ राधाकृष्ण-मिलन आदि पर आधारित अछि। राधाक रूप-वर्णन आ विरह-वर्णन मे विधापतिक ई पाँती द्रष्टव्य थिक-

"आजु मधुपुर जाइतें रे पथ भेताके राधा
मानस मीनतरंगिनी रे विरह अगाधा।"

एकर पश्चात् बहुचर्चित आ मध्यकाल मे सर्वाधिक मैथिल भेल नाटक पारिजातहरणक नाम अबैत अछि 'पारिजातहरण' उमापति उपाध्यायक कीतिक रूप मे नहि अपितु समस्त भारतीय नाट्य साहित्य मे सर्वाधिक लोकप्रिय रहल अछि। एकर प्रमाण ईएह अछि जे सर्वाधिक प्राप्त हस्तलिखित प्रति, सर्वप्रथम मुद्रित आ सर्वाधिक मुद्रित संस्करण-वला नाटक होएबाक गौरव पारिजातहरणे के छैक। रमापति क्षाक 'रुक्मिणी हरण' नाटकक नाम उल्लेख्य अछि। 'रुक्मिणीहरण', 'रुक्मिणी-परिणय आ रुक्मिणी स्वयंवरक नामहु मे प्रसिद्ध अछि जकरा आ महाराज नरेन्द्र सिंहक संरक्षण मे लिखल। एहि कथाक आधार अछि हरिवंशपुराणक स्कन्ध 10 अध्याय 52-54।

एकर पश्चात् कविलालक 'गौरीस्वयंवर' नाटक मे महादेव-पार्वतीक 'विवाहक वर्णन अछि। तैं समग्र पद महेशवाणी सदृश लिक ओ प्रत्येक पद एक भक्तक हृदयोद्गार रूपमे पड़ैत अछि। एहि नाटक मे कवि धतकैती सँ लए नैनायोगिन केबार परीछन प्रभृति मिथिलाक प्रमुख वैवाहिक व्यवहारक साँगोपांग वर्णन कयने छथि। हरिवंशक 115-128 भागक कथाक आधार पर उषा ओ अनिरुद्धक प्रेमकथा-'उषाहरण' मे चित्रित अछि। एहि नाटकक मैथिली कविता मे एहन साँगोपांग वर्णन प्रणाली अपनाओल गेल अछि जे एकरा नाटक कम अछि। कवीश्वर चन्दा झा कृत 'अहिल्याचरित' एहि परम्पराक अन्तिम नाटक थिक। 20म शताब्दीक प्रारंभ मे पाश्चात्य नाट्य प्रणालीक संसर्ग आ बाद मे पारसी थियेटर प्रभाव सँ एहि परम्पराक नाटकक अंत भेल।

Sanjit
11/05